International Journal of Social Science and Education Research

**ISSN Print:** 2664-9845
**ISSN Online:** 2664-9853
**Impact Factor:** RJIF 8.15
IJSSER 2025; 7(1): 950-953
www.socialsciencejournals.net
Received: 02-04-2025
Accepted: 06-05-2025

**डॉ. मोनिका दलाल**
पी.एच.डी. (हिंदी), हिंदी विभाग,
बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय,
रोहतक, हरियाणा, भारत

**Corresponding Author:**
**डॉ. मोनिका दलाल**
पी.एच.डी. (हिंदी), हिंदी विभाग,
बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय,
रोहतक, हरियाणा, भारत

# वृंदावन लाल वर्मा के उपन्याासों में कथोपकथन से पात्रों की चारित्रिक विशेषताओं का उद्घाटन

**डॉ. मोनिका दलाल**

**DOI:** https://www.doi.org/10.33545/26649845.2025.v7.i1l.323

**सारांश**
वृंदावन लाल वर्मा जी ने अपने उपन्याासों में कथोपकथनों से उपर्युक्त तीना कार्य लिये हे। एक कुशल उपन्यासकार की भांति उन्होनें इनके माध्यम से कथा बिखरे सूत्रों को जोड़ कर कथानक के विकास का कार्य लिया है। सामान्यरूप से वर्मा जी अपने कथानकों के विकास के लिये वर्णनों का अवलम्बन करते है, किन्तु कहीं–कहीं कथापकथनों के कुशल विनियोजन से घटित घटनाओं की सूचना देकर कथानक को गति दी गई है। उपन्यास में कथोपकथनका दूसरा प्रमुख कार्य पात्रों के चरित्र–चित्रण में सहायक होना है। पात्रों की भावनाओं, अनुभावों, उद्देश्यों उस घटना–प्रक्रिया में, जिसमें कि वे पात्र भाग ले रहे है, उसकी प्रतिक्रयाएं जानने में, और दूसरों के ऊपर वे अपने वक्तित्व एवं चरित्र तथा क्रियाकलापों से कितना प्रभाव डाल रहे है, यह जानने में कथापकथनों का अत्यन्त महत्व है। इसके अतिरिक्त एक कुशल उपन्यासकार जिसमें कलात्मक अभिव्यक्ति की श्रेष्ठता, परिस्थितियों की यथार्थता एवं अनुभूतियों की गहनता की पकड़, कथोपकथनों के माध्यम से ही विश्लेषण एवं विवरण देने का भी कार्य करता है।

**कूटशब्दः** कलात्मक अभिव्यक्ति, अनुभूतियों की गहनता, सृजन–उद्देश्य, कथोपकथन, अभीष्ट

## प्रस्तावना
पात्रों की चारित्रिक विशेषताओं के उद्घाटन के अतिरिक्त कभी–कभी कथोपकथन उपन्यासकार के जीवन–दर्शन एवं औपन्यासिक कृति के सृजन–उद्देश्य के स्पष्टीकरण के लिये भी प्रयुक्त होते है। अनेक बार ऐसा होता है कि उपन्यासकार अपनी बात स्वयं त कह कर उसे पात्रों के मुख से कहलवा देता है। पर ऐसा करते समय उसें इस बात का ध्यान अवश्य रखना चाहिए कि जिस पात्र के मुख से वह अपना अभीष्ट कहलवाना चाहता है, वह उसकी अभिव्यक्ति के लिये उपयुक्त पात्रता रखता है अथवा नहीं।

उपन्यास के कथोपकथन उपर्युक्त तीन उद्देश्यों में से किसी की भी पूर्ति करें, उनमें सार्थकता, स्वाभाविकता एवं रोचकता आदि गुणो का होना नितान्त वांछनीय है। सार्थकता से हमारा तात्पर्य उनकी कथा–सूत्र को अग्रसर करने तथा पात्रों के चरित्र को स्वष्ट करने की क्षमता से है। यही उनरकी सार्थकत है। संवादो के सन्दर्भ के सन्दर्भ में स्वामाविकता का अर्थ अनकी वक्ता की मानसिक, मनौविज्ञानिक एवं सामाजिक स्थिति एवं स्तर की अनूकूलता से है। रोचकता के अर्न्तगत संवादों की संक्षिप्तता, ममार्मिकता पैनेपन तथा कार्य एवं भावानुसार गति तथा आरोह–अवरोह का उल्लेख किया जा सकता है।[1]

कथानक के भावी विकास की दिशा का संकेत दिया गया है। इस प्रकार वे प्रत्येक घटना का विस्तृत विवरण देने के झंझट से बच गये है। उदाहरण के लिये 'विराटा की पद्मिनी' में कुजंरसिंह और कुमुद के मध्य हुआ निम्नलिखित वार्तालाप इस दृष्टि से विशेष रूप से उल्लेखनीय है–

'कुमुद ने कहा–' काकाजू दलीपनगर किस लिये गये थे? 'आपको तो मालूम ही होगा।' कुमुद ने उत्तर दिया–' मेरी इच्छा न थी कि वह जाते,

परन्तु यहां के राजा ने उन्हें हठ करके भेजा। इस समय विराटा की सहायाता की बड़ी आवश्यकता है।

'इसमे हर्ज ही क्या हुआ?' कुंजर ने उत्तर दिया– विराटा इस समय संकट में है। मुझ सरीखे लोग यदि उसकी सहायता नहीं कर सकते तो जो उसकी सहायता कर सकते है, उनके पास तो निमन्त्रण जायगा ही, परन्तु यदि आपकी कृपा हुई तो देवी सिंह के बिना में अकेला ही बहुत कुछ करके दिखऊंगा।

कुमुद ने कोई उत्तर नहीं दिया।

कुंजर बोला–आगामी युद्ध में, ऐसा जान पड़ता है, विराटा का राजा देवीसिंह का साथ देना।

ऐसी अवस्था में मेरा यहां आना अब असम्भ होगा। क्या विराटा का राजा किसी प्रकार मेरी और हो सकता है?

कुमुद के उत्तर देने के पहले तुरन्त कुंजर ने कहा–'यह असम्भव है। सब दलिपसिंह जानते है। कि मैं कालपी की सेना का मुकाबला करने में उनकी अच्छी सहायता नहीं कर सकता हूं। वह क्यों मेरा साथ देने लगे? और फिर उन्होनें स्वयं देवीसिंह को बुलाया है।

निःस्वास त्यागकर कुंजर सिंह बोला–'अब देवीसिंह के राज्य की अखण्ड़ता में कोई सन्देह नहीं, अर्थात यदि वह कालपी के नवाब को पराजित कर सका।[2]

उक्त संवाद में कथा के विच्छिन्न सूत्रों को जोड़ने, घटित घटनाओं को सांकितिक शैली में सूचितकरने और कथा के भावी विकास की दिशा को संकेति करने के सभी गुण मौजूद है। कुमुद वार्तालाप का सूत्रपात करती हूई नरपत सिंह की तद्विषयक जिज्ञासा को जाग्रत करती है और फिर कुंजर सिंह उसकी प्रतिक्रियास्वरूप कथा के भावी विकास की दिशा का संकेत करता है। संवाद अत्यन्त सीधे–सादे और विषय और विषय से सीधे सम्बद्ध हैं।

इस सन्दर्भ में 'कुण्ड़ली चक्र' में अजीत–ललित सेन संवाद 'झांसी की रानी' में मनु–मोरापन्त संवाद मृगनयनी में निन्नी नटिनी तथा लाखी संवाद भी उल्लेखनीय है।

कथानक को अग्रसर करने के साथ–साथ पात्रों की चरित्रिक विशेषताओं का सफल उद्घाटन करके भी वर्मा जी के संवाद अपनी सार्थकता सिद्ध करते है। उनकी योजना प्रायः (कुछ अपवादों को छोड़ कर जिनकी चर्चा आगे की जायेगी) पात्रो की मानसिंह, मनौविज्ञानिक एवं सामाजिक स्थिति एवं स्तर की अनुकूलता में की गई है। 'टुटे कांटे– के प्रारम्भिक पृष्ठों में मोहन एवं रानी के संवाद इस दृष्टि से विशेष रूप से उल्लेखनीय है। रोनी स्वभाव से ही कर्कशा है। आर्थिक विपन्नता उसकी इस कर्कशता की वृद्धि में अग्नि में घी के समान कार्य करती है– मोहन के आलस्य से उद्दीप्त होकर वह इस रूप में विस्फोट करती है।–

मोहन ने अन्धेरे कोने में सिमट कर पड़ी हुई रोनी से विचार के रूप में प्रस्ताव किया और दूर तक सुनाई पड़ने वाली एक आह भरी, 'रोटी तो खानी ही पड़ेगी'

जैसे किसी ने कठोर चुटकी भर ली हो। रोनी यकायक उठ बैठी और चिल्ला कर बोली, 'हां रोटी क्यों नहीं खानी पड़ेगी? बड़ करतब किया है न आज तुमने। कब से कह रही थी फसल काट कर गाह लो, पर कन पर जू तक न रेंगी।। निकम्मे, निगोड़े।।। चाहती हुं कुएं में गिरकर तुमको हत्यारा कर जाऊं पर तुमकों मेरे पीछे और भी मोज मजा मिलेगा इसलिये रह–रह जाती हूं। रोटी खाने को मन दौड़ रहा है। लाज तक नही आती। वे रह गई हैं थोड़ी सी बालें, डकार लो इनको। फिर भीख मांगना।

मोहन ने धीरे से कहा–'काहे को बिरथा बरस रही हो? मैंने क्या किया है।?'

'क्या किया है'– रोनी ने फटकारा–' इनको और दे देते अपने उन–

मेहन ने फुफकार को दबाते हुए कहा, 'रोटी बनानी हो तो बनाओ, न बनानी हो न बनाओ, परन्तु ज्यादाबक बक मत करो।[3]

श्रोनी और भी तीखी हो गई, 'उन बापों से न बना कुछ कहते हुए। मुझ से ही उलझते रहते हो।

मेहन भी कड़वा पड़ा। 'मेरे पिता सिपाहीगीरी भी जानते थे। उन्होनें न मालूम कितनों के खोपड़े चटाकये थे, और मैं–

'और मैं भी खोपड़ी चटका सकता हूं पर घर की औरत की ही न।

'तुमको जो औरत कहे वह औरत'।

और तुम हो कपूत, कायर। घर में ही मुंह जोरी चलती है। बाहर ऐसे हो जैसे बिल्ली के सामने चूहा। इस इस घर के बेड़े के भीतर ही चख्लात है तुम्हारा पराक्रम।

'कपूत। कायर।। हुं।।। खैर। अब न रहूंगा इस घर या बेड़े मे। जिस घर में तुम सरीखी लक्ष्मी हो, उस घर में मुझ सरीखा कोई रह भी नहीं सकता।'

'न जानूं कितने बार सुन चुकी हूं, पर देखा बाहर जाकर कमाई करते एक दिन भी नहीं।

तोता बोल उठा 'भैया रहने भी दो। थोड़ी देर में रोटी बनी जाती है। फिर सोचेंगे आगे क्या करना है।'

'पत्थर करना है।' रोनी ने टीप दी– आगे करेंगे अपनी छाती के हाड़।

मेहन कड़का, 'बस। बहुत हो चुकी। और वह उठ खड़ा हुआ। रोनी भी खड़ी हो गई।

फुफकारती हुई बोली। आ, आ। मार मुझे। मार डाल। मैं भी अब नहीं जीना चाहती।'

रोनी की उग्रता, कर्कशता एवं वाचालात सभी मानों उसके उक्त संवादों में सजीव हो उठी हैं।[4]

इसी प्रकार 'अमेर बेल' में टहल और कुजीलाल के कथोपकथन दोनों पात्रो की चरित्रिक विशेषताओं की अत्यन्त स्पष्ट रूपरेखा पाठक के सामने रख देते है। टहल स्वभाव से उग्र है। क्रोध में आने परउसे उचित, अनुचित का ध्यान नहीं रहता। इसके विपरीत कुंजीलाल दुनियां देखे हुए है। जमाने की ऊंच–नीच को सझता है, चाटुकार है औराा घोर अवसरवादी। इसके संवादों में यह काइयांपन स्पष्ट झलकता है–

'इतने में अहाते के भीतर एक युवक आया। चेहरा–मोहरा ठीक, देह चुस्त, आखें छोटी, पर जलती हुई सीं। ढ़ीला पैजामा–पांवचा जरा फटा और मटमैला–अद्धी कमीज बिखरे लहराते बाल पैरा में चप्पल।

इसको दखते ही कुजी लाल का क्रोध समाप्त हो गया।

आओ भैया टहल, आओ। बैठोगे–चारपाई निकालूं?

टहलराम ने एक हाथ कमर पर रखकर गर्दन आगे की और दूसरे हाथ की मुट्टी तान कर जहर–बुझे स्वर में कहा, इन गरीबों का खून चूस कर मोटे पड़ेने में लाज नहीं आती तुमको।

झिझक और झेंपक का दबोत हुए कुंजीलाल हँसा, अरे भाई मेरे सामने तुम्हारा जन्म हुआ था। कभी मोटापा देखा मेरे शरीर पर?

'दिया चौतीस सेर अनाज और लिख मारा बही खाते में चासीस सेर। हक दस्तूर।। धर्म दाय।।। रेडियों का टैक्स।।।। और न जाने क्या–क्या?'

तुमने अंग्रेजी पढ़ली सो तुम्हारे लिये धर्म,कर्म,साधु संत, मन्दिर, पुजरी कुछ नहीं। सबको ही फांसी पर चढ़ाने को फिरते हो। इन गरीबों को बीज खवाई के लिये हम गल्ला न दें, तो ये सब बिना मौत मर जाये,।

'अब तो तुम सरीखे मरेगें बिना मौत, मुनीम जी । वह लाल लहर उठ रही है, जो तुम सरीखे सबको समेट ले जायेगी।

' हः हः, मुनीम जी तो कहा बेटा तुमने।[5]

वर्मा जी के उपन्यासों के संवाद अत्यन्त सरस एवं रोचक होते हैं। चुस्त, मार्मिकता एवं नाटकीयता उनकी इस रोचकता के विधायक तत्व हैं। संवादों का रूप वक्ता की मनःस्थिति एवं विषय की अनुरूप परिवर्तित होता रहता है। समस्याओं के विश्लेषण के समय विषय की गम्भीरता के अनुरूप कथन बड़े तथा वाक्य जटिल हो जाते है हल्के फुल्के परिहास एवं व्यंगयमूलक विषयों पर वे तीखे एवं क्षिप्रगतियुक्त हो जाते हैं। वर्मा जी संवादों के साथ प्रायः वक्ता की आंगिक–चेष्टाओं, मुख–मुद्राओं अथवा हाव–भावों का सूक्ष्म विवरण भी देखे चलते है। ये सूक्ष्म विवरण उनके संवादों में एक विशेष प्रकार के नाटकीय प्रभाव को उत्पन्न कर देते हैं। इस दृष्टि से 'मृगनयनी' में मानसिंह एवं निन्नी के लिम्नलिखित संवाद पर्याप्त सजीव बन पड़े है।

निन्नी के रूप और षौर्य से प्रभावित होकर मानसिंह उसे पत्नी रूप में पाने के लिये उसके सामने विवाह का प्रस्ताव रखता है। गोंव की अल्हड़ युवती निन्नी के जीवन मे यह अपने प्रकार का

पहला अवसर है। उसकी घबराहट एवं संकोच देखते ही बनता है–

मानसिंह ने कांपते हुए स्वर में धीरे–धीरे कहा–'सुन्दरी मृगनयनी, साहस नहीं होता, संकोच लगता है, परन्तु कहे बिना नहीं रहा जातौ क्या तुमको ब्याह में पा सकता हूं? क्या अपनी जन्म–संगिनी बना सकता हूं?'

लाखी अत्यन्त कठिनाई से अपने हृदय की धड़कन को दबाकर सामने आई। निन्नी पेड़ की छाल को और भी जल्दी–जल्दी खरोंचने कुरेदने लगी।

लाखी बोली, 'यह तो इनके भाई बतला सकते है।'

उनसे भी पूछँगा। परन्तु पहले इनके मन की भी तो जान हुँ 'राजा ने कहा।

निन्नी खाँसी। लाखी इषारे को समझ गई। उससे सट कर खड़ी हो गई।

निन्नी ने धीरे से कहा, 'गरीबों का और बड़ों का जन्म संग कैसा?

मानसिंह बोला, 'आदिकाल में सब के पुरखे गरीब ही थे। अपने षौर्य से बड़े। षौर्य में तुम मुझ से कम नहीं हो।'

'बड़े लोग कहते कुछ और हैं, करते कुछ और हैं, ऐसा सुना हैं कथा–कहानियों में। 'उसी ओट से निन्नी ने कहा। मानसिंह ने सोचा इसने शकुन्तला की कहानी कहीं सुनी है।

बेला, 'तुम्हारे दिये हुए उस फूल को पगड़ी में खोंस लिया था। अब भी वहीं बान्धे हुं और सदा वहीं रहेगा। गंगा यमुना की सौगन्ध खाता हुं कि जन्मसंगिनी रहोगी। 'मानसिंह का स्वर कांप–काप जा रहा था।

निन्नी ने क्षीण स्वर में प्रतिवाद किया–'सौगन्ध मत खाइये।'

'तो कहो, क्या कहती हो सुन्दरी? 'राजा ने हठ किया।

'मैं राजाओं क भाषा नहीं जानती। निन्नी ने उत्तर दिया। 6

राजा ने अपना हाथ बढ़ाया, 'इस भाषा को संसार भर समझता है। अपना हाथ मेरे हाथ में दे दो। 'गर्दन मोड़े हुए, कनखियों देखते हुए, धडकते कलेजे और अर्द्धस्मित के साथ निन्नी ने अपना कांपता हुआ धुल–भरा हाथ उसके हाथ में दे दिया।

उक्त संवाद की सबसे बड़ी विशेषता है, वक्ता के अनुभावों की सूक्ष्म पकड़। मानसिंह के सामने अकेली पड़ जाने पर निन्नी का वृक्ष की छाल को खरोचना, विवाह का प्रस्ताव किये जाने पर खाँस कर लाती को अपने समीप रहने का संकेत करना, मानसिंह द्वारा सौगन्ध खाने पर क्षीण स्वर में वर्जित, करना और अन्त में स्वीकृति देते हुए अपना धूल–भरा हाथ राजा के हाथ में देते हुए भी गर्दन मोड़ लेना, कनखियों देखना, अर्द्धस्मित आदि के सूक्ष्म विवरण द्वारा उपन्यासकार ने सम्पूर्ण स्थिति का अत्यन्त संजीव चित्र प्रस्तुत कर दिया है। निन्नी में नारीसुलभ संकोच अधिक है, इसलिये उसके अनुभाव अधिक मुखर हैं।

इसी प्रकार 'गढ़ कुण्डार' में भरतपुरा की गढ़ी में हेमवती दर्शन के पश्चात् नागदेव और अग्निदेव के बीच प्रणय–प्रसंग को लेकर चलने वाले संवादों में श्रेष्ठ संवाद के सभी गुण, पात्रानुकूलता, भावानूकूलता, सरसता, रोचकाता, नाटकीयता आदि एक साथ देखने को मिलते हैं।

नाग हेमवती के प्रेम में व्याकुल है। उसके लिये यह अनुभव नया है। उसका हृदय सहसा यह जानने को उत्सुक हो उठता है कि क्या दूसरे व्यक्ति भी प्रेम में पड़ कर उसी प्रकार के कोमल कष्ट का अनुभव करते है, जैसा ि केह स्वयं कर रहा है। नाग की उत्सुकता प्रश्नबनकर अग्निदत से पूछ बैठती है– 'पाण्ड़े तुमने क्या कभी इस भाव का, इस कोमल कष्ट का अनुभव किया है?'

पाण्ड़े ने सिर नीचा किया। अंगड़ाई ली। जमुहाई ली कहा– 'सो जाइए। रात बहुत हो गई।' और साधारण हँसा।

नाग की उत्सुकता सहसा बहुत उचेजित हुई। बड़े आग्रह के साथ अनुरोध किया– 'पाण्ड़े तुम्हें मेरी सौगन्ध है। सच बतलाओं, वह कौनसी सौभाग्यवती है, जो तुम्हारे सदृष तेजस्वी युवा के अंक की प्रतीक्षा कर रही है? तुम्हारी जाति की ही होगी? तुम्हें तो कठिनाई नहीं होगी?'

अग्निदत एकाएक गम्भीर हो गया। होंठ कांपने से लगे। उसकी आंख –मुंदी सी थी और दूसरी खुली हुई सी थी। गर्दन जरा टेड़ी और जिस हाथ के सहारे पलंग पर बैठा था, वह कुछ कड़ा हो गया। उसने स्पष्ट किन्तु कंपित स्वर में कहा–' यदि आप मेरे ऊपर कुछ भी स्नेह रखते हों। तो जितना मै। बतलाना का निश्चय कर लिया है, जब तक कि सफलात की पूरी आशा न हो जाय।

नाग ने टोक कर कहा– 'तो आप कुछ भी न बतलाएँगे? और उसका मुँह उतर गया।

अग्निदत ने अपने भाव को कुछ नरम करके कहा– अवश्य बातऊँगा, परन्तु जहाँ, जिस स्थान पर निशेद्ध कर दूँ, उससे आगे आप कुछ न पूछिएगा।

नाग के आंख से आंख मिलाने पर अग्निदत मुस्करा दिया।

'नाग ने कहा–मै प्रण करता हूं बाबा, बतलाओं भी।'

अग्निदत ने कांपते हुए हृदय को बल देने के लिये एक लम्बी सांस खींची और कहा– 'पूछिए'।

नाग ने एकाग्रमन और प्रोत्साहनमय ढंग से पूछा– क्या आयु है? कौन जाति की है?

अग्निदत ने जरा नीचे देखकर और मुस्करा कर उतर दिया 'पन्द्रह–सौलह वर्ष से अधिक नहीं है।

कौन जाति की है?

अग्निदत ने दृढ़ता के साथ कहा– 'जाति नहीं बतलाऊंगा। परन्तु यह कह सकता हुं कि वह मेरी जाती की नहीं है।'

'रंग कैसा है?'

अग्निदत ने बहुत लजाकर, बिना आंख से आंख मिलाए, उत्तर दिया– 'बहुत खरा गौरा–जैसे तप हुआ सोना। सारे शरीर समे आभा झलकती है।

वह तुम्हें चाहती है?

अग्निदत ने गला साफ करके मुस्करा कर कहां–'हां।'

तुम्हें कैसे मालूम है?'

अग्निदत बहुत खिलखिलाया। नाग ने अपने प्रशन को दुहराया। पाण्ड़ और भी अधिक हँसा। फिर दबी जबान से कहा– 'उससे एक वार कहा था, तुम्हें नहीं देखती हूं, तो बेचेन हो जाती हूं।

नाग का मुख किसी गुप्त हर्ष के कारण खिल उठा। बोला कूर सौन्दर्य, दुष्ट हृदय। किस बेचारी को इतना सताया करता है?

'नाम नहीं बतलाऊंगा।' अग्निदत ने उत्तर दिया, और एक हाथ समे बिस्तर की चादर उलटने–पलटने लगा।

उक्त संवाद में उपन्यासकार ने वक्ता की आंगिक चेष्टाओं (अधरों का कंपन, आँखे का झुकना, खिलखिलाकर हँसना, हाथ का कसना, हाथ से चादर का उलटना पलटना आदि) के सुक्ष्म चित्रण द्वारा उसकी विभिन्न मनःस्थितियों की और तो संकेत किया ही है, एक विशिष्ट नाटकीय प्रभाव को उत्पन्न करने में भी उद्भूत सफलता प्राप्त की है। नाग के मन में जिज्ञासा है। वह अग्निदत के प्रणाय–पंसग के विषय में सब कुछ जान लेना चाहता है।उसके कथन छोटे–छोटे प्रश्न के रूप में हैं। अग्निदत जानता है कि जिस भूमि पद चह चल रहा है, वह किसी भी समय नीचे घसक सकती है। अतः उसके उत्तरों में उसकी सतर्कता झलकती है। वह सब कुछ बताकर भी कुछ नहीं बताता और कुछ भी न बताकर सब कुछ बता जाता है। 7

## निष्कर्ष

वर्मा जी के संवादो की अन्य प्रमुख विशेषतांए हैं, उनकी चुस्ती, मार्मिकता एवं पैनापन। धनुष से छुटे हुए बाण की भांति ये तीव्र गति समे अपने लक्ष्य की और अपेक्षित प्रभाव उत्पन्न करते है। ये गुण उनमें पात्र एवं परिस्थिति की विशिष्टता से उत्पन्न होते है। 'माधवजी सिन्धिया' मे अब्दाली और इब्राहीमगार्दी के संवादो में यह पैनाप और हाजिर जवाबी दृष्टव्य है। पानीपत के युद्ध में मराठों की और से लड़ते इब्राहीम गार्दी घायल होता है। अब्दाली के सैनिक उसे बन्दी बनाकर अब्दाली के सामने पेश करते है।

अब्दाली उससे तोबा करवाना चाहात है। इब्राहीम देश–भक्त है। अन्याय एवं अत्याचार के सामने झुकना नहीं जनता। उसके उत्तरों में उसका दबंगपन स्पष्ट झलकता है।

## संदर्भ सूची


1. उपन्यासकार वृन्दावन लाल वर्माः डॉ. शशिभूषण सिंहल पृ. 86
2. वृन्दावन लाल वर्मा : 'अपनी कहानी' ,प्रथम संस्करण पृ. 1
3. डॉ. श्रीमति कमलेशः वृन्दावन लाल वर्माः के उपन्यासों के नारी पात्र भूमिका, पृ. 2
4. श्री वृन्दावन लाल वर्मा के नारी पात्र : डॉ. कमलेश पृ. 98
5. श्री वृन्दावन लाल वर्मा के नारी पात्र : डॉ. कमलेश पृ. 98
6. ऐतिहासिक उपन्यासकार वृन्दावन लाल वर्मा : रामदरश मिश्र पृ. 116
7. ऐतिहासिक उपन्यासकार वृन्दावन लाल वर्मा : रामदरश मिश्र पृ. 116